❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम् ।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 40, अंक 24 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 अप्रैल, 2017 से रविवार 16 अप्रैल, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अंधविश्वास की बलि कब होगी?

.....जुलाई 2016 में झारखंड के गोड्डा जिले के सुदूर गांव में जादू-टोना सीखने आए युवकों ने अपने गुरु की ही बलि चढ़ा दी थी। इन्हें लगा कि गुरु की ही बलि दे दी जाए तो उनकी सारी विद्या इन्हें प्राप्त हो जाएगी। इससे थोड़ा सा पीछे जाएँ तो पिछले साल ही झारखंड के प्रसिद्ध छिन्नमस्तिका मंदिर में एक व्यक्ति ने पूजा के दौरान अपना गला काटकर जान दे थी। ऐसी घटनाएं पहले पूरे विश्व में होती रही हैं लेकिन समय के साथ उन्होंने आधुनिकता को अपना लिया पर भारत में धर्म के नाम पर यह सब कुछ पूर्व की भांति चल रहा है। ......

पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में एक तांत्रिक ने देवी की प्रतिमा के सामने अपनी मां की कथित तौर पर बलि चढ़ा दी। अभियुक्त नारायण महतो ने पशुओं को मारने के लिए इस्तेमाल होने वाले एक धारदार हथियार से अपनी मां फूली महतो का गला काट दिया। इस मामले में पुलिस ने भले ही अपराधी को गिरफ्तार कर लिया हो लेकिन सवाल अभी भी फरार घूम रहे हैं कि 21 वीं सदी में ऐसे अमानुषिक कृत्य भारत में अभी भी क्यों हो रहे हैं? क्यों अभी भी धर्म के नाम पर अन्धविश्वास हावी है? यह कोई अकेली घटना नहीं है कि नजरंदाज किया जाये बल्कि कभी डायन के नाम पर तो कभी धन प्राप्ति के लिए भारत के कुछ राज्यों में यह घटना आम होती रहती हैं। अज्ञानता और अन्धविश्वास इन राज्यों को अभी भी अपनी गुलामी में जकड़े हुए हैं। पिछले माह ही ओडिशा में बालनगीर में भाई ने देवी काली को प्रसन्न करने के लिए बहन का सिर काट दिया था। इससे पहले जुलाई 2016 में झारखंड के गोड्डा जिले के सुदूर गांव में जादू-टोना सीखने आए युवकों ने अपने गुरु की ही बलि चढ़ा दी थी। इन्हें लगा कि गुरु की ही बलि दे दी जाए तो उनकी सारी विद्या इन्हें प्राप्त हो जाएगी। इससे थोड़ा सा पीछे जाएँ तो पिछले साल ही झारखंड के प्रसिद्ध छिन्नमस्तिका मंदिर में एक व्यक्ति ने पूजा के दौरान अपना गला काटकर जान दे थी।

ऐसी घटनाएं पहले पूरे विश्व में होती रही हैं लेकिन समय के साथ उन्होंने आधुनिकता को अपना लिया पर भारत में धर्म के नाम पर यह सब कुछ पूर्व की भांति चल रहा है। क्योंकि मानव बलि के पीछे के तर्क सामान्य रूप से धार्मिक बलिदान जैसे ही हैं। मानव बलि का अभीष्ट उद्देश्य अच्छी किस्मत लाना और देवताओं को प्रसन्न करने की लालसा आदि में होता है, हमें नहीं पता कि रक्त से प्रसन्न होने वाले इन काल्पनिक देवताओं को देवता कहें या राक्षस? प्राचीन जापान में, किसी इमारत निर्माण की नींव में अथवा इसके निकट प्रार्थना के रूप में किसी कुंवारी स्त्री को जीवित ही दफन कर दिया जाता था जिससे कि इमारत को किसी आपदा अथवा शत्रु-आक्रमण से सुरक्षित बनाया जा सके। दक्षिण अमेरिका में भी नरबलि का लम्बा इतिहास रहा है। शासकों की मौत और त्यौहारों पर लोग उनके सेवकों की बलि दिया करते थे। पश्चिमी अफ्रीका में उन्नीसवीं सदी के आखिर तक नरबलि दी जाती थी या फिर चीन की महान दीवार के बारे में कहा जाता कि उसे अनगिनत लाशों पर खड़ा किया गया था। लेकिन वह पौराणिक काल था जिसमें मानव सभ्यता ज्ञान से दूर थी। हाँ, इसमें भारत का वैदिक कालखंड सम्मिलित नहीं होता क्योंकि वेदों में ऐसे सैकड़ों मंत्र और ऋचाएं हैं जिससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि वैदिक धर्म में बलि प्रथा निषेध है और यह प्रथा हमारे धर्म का हिस्सा नहीं है। जो बलि प्रथा का समर्थन करता है वह धर्मविरुद्ध दानवी आचरण करता है।

विद्वान मानते हैं कि वैदिक धर्म में समय के साथ विक्रतियां आती गयीं। लोक परम्परा की धाराएं भी जुड़ती गई और अज्ञानता में लिप्त समाज में उन्हें वैदिक धर्म का हिस्सा माना जाने लगा। जैसे वट वृक्ष से असंख्य लताएं लिपटकर अपना अस्तित्व बना लेती हैं लेकिन वे लताएं वृक्ष नहीं होतीं उसी तरह वैदिक आर्य धर्म की छत्रछाया में अन्य परम्पराओं ने भी जड़ फैला लीं। बलि प्रथा का प्रचलन हिन्दुओं के शाक्त और तांत्रिकों के संप्रदाय में ही देखने को मिलता है लेकिन इसका कोई धार्मिक आधार नहीं है। किन्तु आज भी इनका इसी रूप में जीवित रहना इस बात के जरूर संकेत देता है कि अन्धविश्वास की जड़ें अभी भी देश में बहुत गहराई तक समाई हैं।

हमारे देश में अन्धविश्वास पर बनने वाली फिल्में बहुत पसंद की जाती है लेकिन इन फिल्मों का लेशमात्र भी सकारात्मक असर समाज पर नहीं पड़ता। हाँ इसका नकारात्मक असर जरूर दिखाई दे जाता है इसका जीता - जागता उदाहरण सदियों बाद भी समाज में बलि प्रथा का कायम रहना है। थोड़े समय पहले ही भारत में आई बाहुबली फिल्म में किस तरह ताकत व युद्ध की जीत की प्रप्ति के लिए पशुबलि को दिखाया गया था। बहुत से समुदायों में लड़के के जन्म होने या उसकी मान उतारने के नाम पर बलि दी जाती है तो कुछ समुदायों में आज भी विवाह आदि समारोह में बलि दी जाती है। दो वर्ष पहले मेरे ही सामने की घटना है उत्तराखंड के चकरोता जिले में एक परिवार ने अपने लड़के के जन्मदिवस पर देवताओं को प्रसन्न करने के लिए तीन पशुओं की बलि दी थी।

इससे साफ पता चलता है कि राष्ट्रीय स्तर पर हम कितने भी खुद को ज्ञानवान दिखाएं लेकिन स्थानीय स्तर पर कई जगह आज भी हम हजारों साल पीछे हैं। भले ही आज इसके लिए कानून हो लेकिन अभी भी बहुत सारे आदिवासियों में नर बलि या पशु बलि के अंधविश्वास की परम्परा आज भी कायम है। ज्यादा दूर की बात नहीं 2015 राजस्थान में अलवर जिले के पहल गाँव के एक खण्डहर में दबे कथित खजाने के लालच में हुई दो बच्चों की कथित बलि का मामला सबके सामने आया था। 2013 में राजधानी दिल्ली के भलस्वा इलाके में एक बच्चे की सिरकटी लाश मिली थी। पुलिस ने शक के आधार पर बताया था कि बच्चे की हत्या बलि के लिए की गई है। दरअसल, नरबलि का इतिहास बहुत पुराना है। दुनिया की विभिन्न पौराणिक संस्कृतियों में नरबलि का प्रचलन रहा है लेकिन वक्त के साथ यह कुप्रथा खत्म होती चली गई। धार्मिक अनुष्ठानों में नरबलि की जगह पशुओं की बलि दी जाने लगी। आज नरबलि एक बड़ा अपराध है जिसके लिए भारतीय संविधान में कठोर कानून भी है लेकिन दु:ख की बात तो यह है कि आज भी नरबलि के मामले सामने आ रहे हैं। आज के आधुनिक युग में जहां इंसान अंतरिक्ष की सैर कर रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ लोग आखिर प्राचीन काल की इस बर्बरता से अभी तक बाहर नहीं निकल पाए क्यों?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 23 अप्रैल,17 प्रात: 11 बजे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक रविवार 23 अप्रैल, 2017 को प्रात: 11:00 बजे आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में आयोजित की गई है। सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि अन्तरंग सभा बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थित दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी दें।

– **सुरेशचन्द्र आर्य**, सभा प्रधान
प्रकाश आर्य, सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली सभा के सहयोग से

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन एवं द. भारतीय वैदिक सम्मेलन सम्पन्न

समारोह की विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में

वेद-स्वाध्याय

भूमिमातः!

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।। -अथर्व. 112/1/62
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **भूमिः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - पृथिवि=हे भूमे! हम **ते प्रसूताः**= तुझसे उत्पन्न, तेरे पुत्र हैं, अतएव **उपस्थाः**=तेरी गोद, तेरे आश्रय-स्थानों के सब पदार्थ **अस्मभ्यम्**=हमारे लिए हों और **अनमीवाः अयक्ष्माः सन्तु**= आरोग्य वर्धक व रोगनाशक हों **नः दीर्घ आयुः**= हमारी आयु दीर्घ हो **वयम्**= हम **प्रति बुध्यमानाः** = जागते हुए, ज्ञान-सम्पन्न होते हुए **तुभ्यम्**=तेरे लिए बलिहृतः =अपनी बलि देने वाले **स्याम**=हों।

विनय- हे भूमिमातः! हम तेरे पुत्र हैं, तुझसे उत्पन्न हुए हैं। यह पार्थिव देह हमें तेरे रजः कणों से मिली है। हे मातः! हमें अपनी गोद में बिठाओ। तेरी आनन्दमयी गोद में बैठकर हम सम्पूर्ण मातृसुख को प्राप्त करें, तेरे दुग्धामृत का पान भी करें। तू हमें केवल सुखमय आश्रय-स्थानों को ही प्रदान नहीं करती, अपितु अपने उन सर्वस्थानों में तू हमें हमारे उपयोगी भोग्य-पदार्थों को भी देती है। तेरी ऐसी गोद में हमारा आश्रय पाना, हमारे लिए रोगरहित, निरन्तर-निर्बाध पुष्टि (उन्नति) का देने वाला हो। हे विस्तृत मातृभूमे! तेरे आश्रय में रहते हुए हमें जो तेरे अन्न, फल, औषध, जल, वायु, धन, पशु मान, रक्षा, विद्या, सुख आदि मिलते हैं वे हमें ऐसे शुद्ध और उचित रूप मे मिलते रहें कि ये हमारे रोगों, भयों ओर दुःखों को हटाकर हमारी स्वास्थ्यकर पुष्टि को ही करते जाएँ; हमारी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति ही साधते जाएँ। हे मातः! तेरा यह सब भोग्य-पदार्थरूपी पुष्टिकारक दूध तेरे हम बच्चों के लिए ही है-हम बच्चों की रोग-भयरहित पुष्टि के लिए ही है। हमारी शारीरिक उन्नति ऐसी अक्षुण्ण हो कि हम पूर्ण दीर्घ आयु को भोगें। हमारी मानसिक व आत्मिक उन्नति भी ऐसी अक्षुण्ण हो कि हम क्रमशः 'प्रतिबुध्यमान' होते जाएँ, उत्तरोत्तर अधिक ज्ञान और बोध से (आत्म-जागृति से) युक्त होते जाएँ। एवं, हम अबोध बालकों का ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ेगा, हम सब प्रकार के ज्ञान में उन्नत होंगे, त्यों-त्यों, हे मातः! हम तेरे अपने पर किये गये अपार उपकारों को भी-तेरे मातृत्व को भी-अधिक अनुभव करने लगेंगे तथा तेरे प्रति अपने कर्त्तव्यों के लिए भी जाग्रत हो जाएँगे, अतः तब हम राष्ट्र-कर के इस तुच्छ धन की बलि, किसी भय से नहीं किन्तु 'प्रतिबुध्यमान' होते हुए, जानते हुए, इसे कर्त्तव्य समझते हुए-प्रेम से तुम्हारे प्रति दिया करेंगे। केवल यह तुच्छ साधारण, नित्यप्रति की बलि ही नहीं, किन्तु हे मातः! हममें तेरे प्रति कर्त्तव्य का बोध ऐसा जाग्रत हो जाए कि हम तेरे लिए सब-कुछ बलिदान करने को सदा उद्यत रहें। तुझसे मिला हुआ यह शरीर, यह आयु, यह प्राण, यह पुष्टि, यह धन, यह सब-कुछ और किसी काम के लिए है? यदि तेरी ये वस्तुएँ आवश्यकता पड़ने पर तेरे लिए समर्पित न हो सकें-तेरे दूध को चुकाने का समय आने पर भी यदि हम इन्हें भेंट चढ़ाने से हिचकें-तो ऐसे धन, ज्ञान और जीवन को धिक्कार है! इन पापमय वस्तुओं का भूमि पर रहना व्यर्थ है! नहीं, हम सर्वस्व तुझ पर बलि चढ़ा देने को सदा उद्यत रहेंगे।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मुसलमान कैसे बन सकेंगे पुरोहित?

मध्य प्रदेश में अब कोई भी पुरोहित का कोर्स कर पूजा-पाठ करा सकेगा। प्रदेश सरकार एक साल के इस कोर्स की शुरुआत जुलाई से करने जा रही है। इस कोर्स में किसी जाति या धर्म की बाध्यता नहीं होगी। कोर्स का संचालन स्कूल शिक्षा विभाग के महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान के जरिए किया जाएगा। शायद मध्य प्रदेश सरकार का यह फैसला देश में धर्मनिपेक्षता की टपकती छत पर कुछ देर ही सही मिट्टी डालने का कार्य करे पर इस पूरी खबर से सवालों के अंकुर फूटते जरूर दिखाई दे रहे हैं। सरकार के इस कदम का ब्राह्मण समाज एक बार विरोध करने जा रहा है। ज्ञात हो पिछले साल मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अनुसूचित जाति विभाग को एक योजना पर काम करने को कहा था, जिसके जरिए दलित समुदाय के युवाओं को पंडिताई और पुरोहित बनने का प्रशिक्षण दिया जाना था। सरकार की मंशा दलित समुदाय के युवाओं से ब्राह्मणों की तरह पूजा, पाठ, यज्ञ हवन और अन्य मांगलिक कार्य करवाने की थी। सरकार की इस योजना के खिलाफ प्रदेश ब्राह्मण लामबंद हो गए थे और पूरे प्रदेश में प्रदर्शन हुए थे। इसके बाद सरकार को अपने कदम पीछे खींचने पड़े थे। एक बार स्थिति वैसी ही बनती जा रही है। हालाँकि मीडिया इस पूरे मामले को मुस्लिम समुदाय से जोड़कर दिखा रहा है जबकि सरकार के फैसले में जाति धर्म की स्पष्ट रूप से कोई बाध्यता नही है। इसमें सिख, ईसाई, बौद्ध या अन्य मजहब के लोग भी आ सकते हैं।

ब्राह्मण समुदाय द्वारा इस फैसले का विरोध किया जाना कितना जायज है या नहीं। इस पर टिप्पणी करने के बजाय यहाँ उठ रहे सवाल जरूर जायज हैं। इसमें एक बात तो यह कि समाज परिवर्तित और विकसित होते हुए आज ऐसे दौर में आ गया है कि अब पुराने सामाजिक ढांचे कायम रखना कठिन है। इस कारण आज जिन्हें पिछड़ी जाति कहा जाता रहा है वह पुरोहितवाद और राजनीतिक, सामाजिक शोषण को खुलकर चुनौती देने के मूड में है और सही भी है जहाँ तक हमारा मानना है धर्म, देश या समाज पर किसी एक जाति वर्ण का स्वमित्व कैसे हो सकता है? दूसरा यह भले ही सरकार का राजनैतिक फैसला हो लेकिन यह धर्म और राजनीति की बजाय आस्था का विषय है और आस्था सीधे-सीधे उपासना पद्धति के साथ उस धर्म के मूल सिद्धांतों से जुड़ी होती है। आखिर कैसे एक मजहब से जुड़ा व्यक्ति दूसरे धर्म के मूल सिद्धांत उसके कर्मकांड आदि का आस्था, लगन के साथ पालन करेगा? और यदि व्यापारिक दृष्टि से या जीवकोपार्जन के लिए वह एक मुखौटा लगाकर इस कार्य को करें भी तो हम समझते हैं कि यह धार्मिक रीति-नीति का सिर्फ उपहास होगा।

दरअसल पुरोहित दो शब्दों से बना है 'पर' तथा 'हित' अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो दूसरों के कल्याण की चिंता करे। प्राचीन काल में आश्रम प्रमुख को पुरोहित कहते थे जहां शिक्षा दी जाती थी। हालांकि यज्ञ कर्म करने वाले मुख्य व्यक्ति को भी पुरोहित कहा जाता था। यह पुरोहित सभी तरह के संस्कार कराने के लिए भी नियुक्त होता था। इसमें गौरतलब यह है कि वैदिक काल में पुरोहित का कार्य किसी जाति विशेष से जुड़ा हुआ नहीं था। लेकिन धीरे-धीरे समय के साथ पुरोहितों ने मनमाने ढंग से ऋग्वेद पर अधिकार कर यह प्रचार कर दिया कि यह ब्राह्मणों द्वारा बनाया गया है और वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार केवल ब्राह्मण को है। धीरे-धीरे यह सामन्ती व्यवस्था बन गयी जिस कारण पुरोहित शब्द 'परहित' की बजाय स्वहित में निहित हो गया और यहीं से समाज में अशिक्षा और जातिवाद, छुआछूत आदि की विसंगति ने जन्म ले लिया जो अब तक इसकी जकड़ में गिरफ्त है।

इस ताजा प्रकरण को ही देखें तो नए सिरे से इस कोर्स पर विवाद बढ़ने की उम्मीद है। ब्राह्मण समाज के युवा सरकार की इस कोशिश से खासे नाराज हैं। इन्हीं में से एक अमिताभ पाण्डेय कहते हैं, ''पुरोहिताई ऐसा काम नहीं है कि कोई भी कर ले। प्राचीन काल से हिन्दू धर्म में ब्राह्मण इसे करते चले आ रहे हैं। अब जहां तक सवाल है किसी भी धर्म के लोगों को इसमें प्रवेश देने का तो उसे किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता।''

हालाँकि इनका यह कहना कि इस कार्य को सिर्फ ब्राह्मण ही करा सकते हैं तो इसका कोई वैदिक प्रमाण नहीं है। इसे सिर्फ एक मनघड़ंत प्रथा के सिवाय कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि सृष्टि का नियम है कि सभी जातियाँ ईश्वर निर्मित हैं न कि मानव निर्मित हैं। सभी मानवों कि उत्पत्ति, शारीरिक रचना, संतान उत्पत्ति आदि एक समान होने के कारण उनकी एक ही जाति है और वह है मनुष्य। हाँ यह उसके धार्मिक आचरण पर निर्भर करता है यदि कोई वेद पढ़ना चाहे वेद पाठन करें और यदि कोई युद्ध कौशल में निपुण है तो वह युद्ध करे। किसी भी कार्य पर एकाधिकार करना हमारी वैदिक सभ्यता के विरुद्ध है। सामाजिक वर्चस्व कायम रखने को इस तरह की भ्रांतियां फैलाना सिर्फ और सिर्फ अपना निजी स्वार्थ प्रकट करता है। इस कारण ब्राह्मण समुदाय द्वारा इसका विरोध किसी भी रूप में जायज नहीं माना जा सकता।

मनुष्य और उसके समुदाय की पहचान जन्म के आधार पर करना समुदाय के रंग या बनावट को जन्म से जोड़े रखना अमानवीय, असामाजिक और मनुष्य की प्रगति का विरोधी कदम है। कुछ समय पहले की ही खबर थी कि राजस्थान में दलितों के एक बड़े हिस्से ने अपने सामाजिक, पारिवारिक और धार्मिक कार्यों के लिए खुद के बीच से ही पंडित तैयार कर लिए हैं। राजस्थान में दलित समुदाय के ये पुरोहित अपने समाज में कर्मकाण्ड और धार्मिक अनुष्ठान कराते हैं। ये दलित पुरोहित वैसे ही कर्मकाण्ड सम्पन्न करते हैं जैसे ऊँची जाति के ब्राह्मण। दलितों का कहना है इससे छुआछूत पर रोक लगेगी।

हालाँकि सरकार की यह एक प्रायोगिक शिक्षा नीति है लेकिन इसमें सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या यह सब आस्था की नीति के अंतर्गत आएगा? क्योंकि उदाहरण के तौर पर चलें यदि कोई हमें कहे कि मस्जिद में अजान करने के लिए मासिक वेतन मिलेगा यदि जीविकोपार्जन के लिए हम ऐसा कर भी दें तो क्या हमारे अन्दर उस मत के लिए उसी स्वरूप में आस्था उत्पन्न होगी? शायद नहीं! इस कारण अन्य सम्प्रदाय के व्यक्तियों को कैसे और किस आधार पर माना जाये कि वह यह कर्मकांड उसी धार्मिक मनोवृत्ति, आस्था और पूरे मन से करेगा? मेरा मानना है जाति की दीवार अवश्य गिरनी चाहिए पर इसमें कहीं भी धार्मिक नीति या आचरण का उपहास न हो!

- सम्पादक

आर्य समाज यमुना विहार का 36वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज यमुना विहार 12 से 16 अप्रैल 2017 के बीच अपने 36वें वार्षिकोत्सव पर सामवेदीय यज्ञ का आयोजन कर रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री (फर्रूखाबाद) होंगे। कार्यक्रम के अन्तर्गत भक्ति संगीत, वैदिक प्रवचन, आर्य महिला सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जाएगा।

-राम स्वरूप शास्त्री, संयोजक

आर्य समाज सुन्दर विहार का 32वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सुन्दर विहार दिल्ली अपना 32वां वार्षिकोत्सव 14 से 15 अप्रैल 2017 के बीच आर्य समाज प्रांगण में आयोजित कर रहा है जिसके अन्तर्गत यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से होगा यज्ञ ब्रह्मा डॉ. लक्ष्मण कुमार शास्त्री जी होंगे।

-कंवरभान क्षेत्रपाल, प्रधान

आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर लाडवा (कुरुक्षेत्र) के तत्त्वावधान में 28 मार्च से 2 अप्रैल के मध्य नवसंवत्सर व आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारभ 29 यज्ञ वेदियों पर 113 यजमान के सामूहिक यज्ञ से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी रहे। पानीपत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक तेजवीर जी ने अपने सुमधुर भजनों से सभी का मनमोह लिया। आर्य समाज से सम्बद्ध सुगनी देवी डी.ए.वी. कन्या उ. मा. विद्यालय की छात्राओं एवं समस्त स्टाफ की शिक्षिकायों के समक्ष पुरुषार्थी जी ने वेदोपदेश किया। मंच संचालन श्री राम जी शास्त्री एवं उपप्रधान श्री जय किशन जी ने किया। आसपास के ग्रामवासियों ने बड़ी संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

-ज्ञानेन्द्र टंडन, मंत्री

अमर शहीद भगत सिंह के भतीजे किरण जीत सिंह का स्वागत

गोकुल की प्याऊ स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर एवं नृसिंह जी प्याउ मार्केट एसोसिशन के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय नववर्ष बड़ी धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाया गया। आर्यवीर दल के संचालक एवं कार्यक्रम संयोजक महेश परिहार ने बताया कि भारतीय नववर्ष प्रतिपदा का स्वागत यज्ञ द्वारा किया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्री शिवराम आर्य व श्री गजेन्द्र सिंह जी थे। तत्पश्चात् स्थानीय स्कूलों के बच्चों ने आर्य समाज के नेतृत्व में नृसिंह चौराहा पर हजारों राहगीरों व आमजन का तिलक लगा मुंह मीठा कराकर नववर्ष की शुभकामनाएं दी एवं लोगों के वाहनों एवं घरों पर '1200' 'ओ३म्'' ध्वज लगाए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि उपज व फल-सब्जी मंडी के डायरेक्टर श्री राकेश परिहार ने नववर्ष के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अमर शहीद भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह के जोधपुर पधारने पर आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनी नगर पदाधिकारियों द्वारा उनका स्वागत किया गया।

-महेश परिहार, संयोजक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

विशाल शोभायात्रा सम्पन्न

हिन्दू पर्व समन्वय समिति दिल्ली के नेतृत्व में इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा दिल्ली सेवा मण्डल के तत्वावधान में 2 अप्रैल को विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जो रामलीला मैदान से चलकर क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में होती हुई करोलबाग में सम्पन्न हुआ। विचारणीय तथ्य यह है कि पिछले कुछ समय से अलग-अलग हिन्दू विचार धारा के संगठनों को अब यह सोचने पर मजबूर होना पड़ रहा है कि यदि सभी अब एकत्र नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक पद्धति से किया गया। तथा यात्रा का दायित्व दिल्ली आ प्रतिनिधि सभा को दिया गया। यात्रा में यज्ञ की झांकी अग्रणी रही। इन सभी कार्यो को आर्य समाज कीर्तिनगर व संस्कृतकुलम हरिनगर के आचार्य, ब्रह्मचारी, यज्ञ ब्रह्मा डॉ. ऋषिपाल शास्त्री, आचार्य सत्य प्रकाश ने सम्पन्न करवाया। यात्रा करोल बाग में एक समारोह में परिवर्तित हो गयी जहां मंच पर अन्य पदाधिकारियों के साथ श्री ओम प्रकाश आर्य उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व सतीश चड्ढा महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा को स्मृति चिन्ह, सरोपा व पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। -***सतीश चड्डा, महामन्त्री***

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

शोक समाचार

महात्मा रामकिशोर वैद्य का निधन

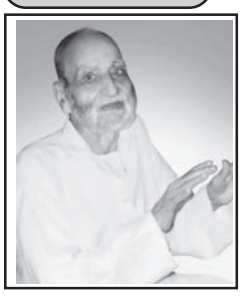

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं पंजाब सभा में अपनी वेद प्रचार की सेवाएं देने वाले, आर्यसमाज सी-13 हरि नगर के धर्माचार्य महात्मा राम किशोर वैद्य जी का 5 अप्रैल 2017 को प्रात: 10 बजे 99 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से तिहाड़ गांव (सुभाष नगर) शमशान घाट में आचार्य कुंवरपाल शास्त्री, आचार्य सोमदेव शास्त्री एवं आचार्य अशोक शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित होकर अपनी श्रद्धांजलि दी। शान्ती यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 8 अप्रैल को सम्पन्न हुई।

श्री भगवानदास यादव जी को पत्नी शोक

आर्यसमाज नांगल राया के प्रधान श्री भगवानदास जी की धर्मपत्नी श्रीमती लीलावंती जी का 7 अप्रैल की सायंकारल नई दिल्ली के मैक्स हॉस्पीटल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन खजानबस्ती, मायापुरी शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 16 अप्रैल को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती सुशीला त्यागी का निधन

वीरमाता एवं वैदिक विदूषी दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की निवर्तमान प्रथम महिला अध्यक्ष, वर्तमान में संरक्षक, आर्य समाज मस्जिद मोठ की संरक्षक एवं विभिन्न संस्थाओं की प्रभारी श्रीमती सुशीला त्यागी जी का 28 मार्च 2017 निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि प्रार्थना सभा 7 अप्रैल को आर्य समाज मस्जिद मोठ में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 10 अप्रैल, 2017 से रविवार 16 अप्रैल, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 अप्रैल, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 अप्रैल, 2017

गुरुकुल पौंधा में नि:शुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 मई से 4 जून 2017 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा लगभग 700/- व लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 28 मई 2017 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 4 जून 2017 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

- श्री सुखबीर सिंह, शिविर संयोजक
मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 09350502175, 09540012175

प्रतिष्ठा में,

आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार हेतु नि:शुल्क शिक्षण सेवा

मध्य प्रदेश, असम, नागालैंड के आदिवासी क्षेत्रों अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के छात्रावासों, विद्यालयों तथा महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. द्वारा चलाए जा रहे संस्थानों में शिक्षा कार्यों को गति प्रदान करने हेतु अपनी नि:शुल्क सेवाएं अर्पित करने को तत्पर महाशय जी से आशीर्वाद प्राप्त करती अध्यापिकाएं।

महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश (18 भाषाओं में)
सीडी में उपलब्ध मूल्य मात्र 30/-रु.

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,
मो. 9540040339

क्या खुशबू, क्या स्वाद,
एम डी एच मसाले हैं खास

94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह